thearyasamaj.org

ओ३म्

ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 89 अंक : 11
फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा
विक्रम संवत् 2071
कलि संवत् 5115
5 मार्च से 21 मार्च, 2015
दयानन्दाब्द : 190
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,115
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुनदेव चड्डा , कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा , जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक :
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजापार्क, जयपुर ।
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 व 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा
सम्पादक, आर्य मार्तण्ड,
42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास ,
जयपुर ।
मोबाईल – 9314032161
मुद्रक :
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स , जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamartand

महान् स्वतन्त्रता सेनानियों एवं राष्ट्र–निर्माताओं, को आर्य प्रतिनिधि सभा , राजस्थान द्वारा शतशत नमन ।

सभी देशवासियों को आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान की ओर से नवसस्येष्टि (होलिका) पर्व की शुभकामनाएँ।

निधन :
28 फरवरी, 1963

नाम : **माननीय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**
जन्म : 3 दिसम्बर, 1884
पिता : श्री महादेव सहाय
माता : श्रीमती कमलेश्वरी देवी
राजनैतिक जीवन : अध्यक्ष, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1934, 1939)
पहचान : भारत के प्रथम राष्ट्रपति एवं संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य
सम्मान : भारतरत्न
पुस्तकें : आत्मकथा, बापू के कदमों में, इण्डिया डिवाइडेड, सत्याग्रह ऐट चम्पारण, भारतीय संस्कृति व खादी का इतिहास

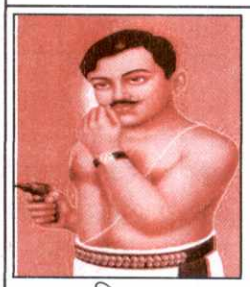

बलिदान :
27 फरवरी, 1931

नाम : **चन्द्रशेखर तिवारी**
जन्म : 23 जुलाई, 1906
पिता : पण्डित सीताराम तिवारी
माता : श्रीमती जगरानी देवी
उपनाम : आजाद
संगठन : हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोशियेशन , हिन्दुस्तानी प्रजातान्त्रिक संघ
मुख्य कार्य : भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को नेतृत्व

बलिदान :
26 फरवरी, 1966

नाम : **विनायक दामोदर सावरकर**
जन्मः 28 मई, 1883
जन्मस्थान : भागुर ग्राम, जिला नासिक
पिताः दामोदर पंत सावरकर
माता : श्रीमती राधाबाई
शिक्षा : कला स्नातक, फर्ग्युसन कॉलेज, पुणवार एट ला लन्दन
प्रसिद्ध नाम : वीर सावरकर
राजनैतिक पार्टी : अखिल भारतीय हिन्दू महासभा
संगठन : अभिनव भारत
पुस्तक : द इण्डियन वार ऑफ इन्डिपेंडेंस
मुख्यकार्यः भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का नेतृत्व

यह सत्य है कि सुशिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान ही रहता है। – चतुर्दश समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश

thearyasamaj.org

वेदामृत "गौतमाहल्ययोः कथाविषयः"

इन्द्रागच्छेति ।.....गौरावस्कन्दिन्नहल्यायै जारेति। तद्यान्येवास्य चरणानि तैरेवैनमेतत्प्रमोदयिषति।। - शत. ३. ३. ४. १८ ।
रेतः सोमः ।। - श. कां. ३ । अ. ३। ब्रा. २। कं. १।।
रात्रिरादित्यस्यादित्योदयेऽन्तर्धीयते ।। -निरू. अ. १२ । खं.११।।
सूर्यूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्व इत्यपि निगमो भवति । सोऽपि गौरूच्यते।। -निरू. अ. २ । खं. ६ ।।
जार आ भगम् । जार इव भगम् । आदित्योऽत्र जार उच्यते, रात्रेर्जरयिता ।। - निरू. अ. ३। खं. १६ ।।

भाषार्थ : अब जो दूसरी कथा इन्द्र और अहल्या की है, कि जिसको मूढ़ लोगों ने अनेक प्रकार बिगाड़ के लिखा है। सो उसको ऐसा मान रखा है कि –

'' देवों का राजा इन्द्र देवलोक में देहधारी देव था। वह गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या के साथ जारकर्म किया करता था। एक दिन जब उन दोनों को गौतम ने देख लिया, तब इस प्रकार शाप दिया कि – हे इन्द्र! तू हजार भग वाला हो जा तथा अहल्या को शाप दिया कि तू पाषाणरूप हो जा। परन्तु जब उन्होंने गौतम की प्रार्थना की कि हमारे शाप का मोक्षण कैसे वा कब होगा, तब इन्द्र से तो कहा कि तुम्हारे हजार भग के स्थान में हजार नेत्र हो जायें और अहल्या को वचन दिया कि जिस समय रामचन्द्र अवतार लेकर तेरे पर अपना चरण लगावेंगे, उस समय तू फिर अपने स्वरूप में आ जावेगी ।''

इस प्रकार पुराणों में यह कथा बिगाड़ कर लिखी है। सत्य ग्रन्थों में ऐसे नहीं है।

तद्यथा –

(इन्द्रागच्छेति.) अर्थात् उन में इस रीति से है कि– सूर्य्य का नाम इन्द्र, रात्रि का अहल्या तथा चन्द्रमा गौतम है। यहाँ रात्रि और चन्द्रमा का स्त्री – पुरूष के समान रूपकालङ्कार है। चन्द्रमा अपनी स्त्री रात्रि से सब प्राणियों को आनन्द कराता है और उस रात्रि का जार आदित्य है। अर्थात् जिस के उदय होने से रात्रि अन्तर्धान हो जाती है और जार अर्थात् यह सूर्य्य ही रात्रि के वर्तमान रूप श्रृंगार को बिगाड़नेवाला है। इसलिये यह स्त्रीपुरूष का रूपकालङ्कार बांधा है कि जैसे स्त्री पुरूष मिलकर रहते हैं, वैसे ही चन्द्रमा और रात्रि भी साथ–साथ रहते हैं और रात्रि को 'अहल्या' इसलिये कहते हैं कि उसमे दिन लय हो जाता है। तथा सूर्य्य रात्रि को निवृत्त कर देता है, इसलिए वह उसका 'जार' कहाता है।

इस उत्तम रूपकालङ्कारविद्या को अल्पबुद्धि पुरूषों ने बिगाड़ के सब मनुष्यों में हानिकारक फल धर दिया है। इसलिए सब सज्जन लोग पुराणोक्त मिथ्या कथाओं का मूल से ही त्याग कर दें।

–''ग्रन्थप्रामाण्याप्रामाण्यविषय'', ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

सम्पादकीय

ज्ञान और कर्म का समन्वय

'कर्म ही पूजा है' यचह वचन इस भाव से उद्भूत है कि वैदिक दर्शन में कर्म किये बिना पूजा करते रहने को ईशभक्ति नहीं माना गया है। इस सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द का जीवन–दर्शन, उनके द्वारा की गयी स्तुति–प्रार्थना–उपासना के महत्त्व की व्याख्या और उनका ईश्वर–विचार एक सु–अनुशासित जीवन की गत्यात्मकता की ओर प्रेरित करता है जबकि कोरी प्रार्थना का दर्शन प्रत्येक दृष्टि से एक गतिविहीन दर्शन है जो जड़ता और अकर्मण्यता की ओर ले जाता हैं संसार के त्याग का दयानन्द का पूर्ण संकल्प वस्तुतः समर्पण और सेवा का संकल्प है जिसमें प्रतिदान या अनुमोदन की कोई अपेक्षा नहीं है। यह तो सतत प्रयत्न ही है जिससे मनुष्य को बन्धन के फन्दों से मुक्ति मिलती है। यही कारण है कि स्वामी द्यानन्द केवल ज्ञानमार्गी या केवल कर्ममार्गी नहीं हैं अपितु दोनों के समन्वय में विश्वास करते हैं। वे एतदर्थ ईशोपनिषद् के मन्त्रत्रय प्रस्तुत करते हैं–

1. अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽ विद्यामुपासते।
   ततो भूय इव ते तमो यऽ उ विद्यायांरताः।। (मन्त्र–9)
2. अन्यदेवाहुर्विद्यायाऽअन्यदाहुरविद्यया।
   इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे। (मन्त्र–10)
3. विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयँ सह।
   अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।। (मन्त्र–11)

अर्थात् जो अविद्या अर्थात् कर्म की उपासना करते हैं वे घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं और जो विद्या अर्थात् ज्ञान की उपासना करते हैं वे उससे भी घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं। कर्म का अन्य ही फल है; ऐसा हमने बुद्धिमान् पुरूषों से सुना है। जो अविद्या से मुत्यु को पार करके विद्या से अमरत्व प्राप्त कर लेता है। ये वचन इतने स्पष्ट हैं कि इनकी और व्याख्या अपेक्षित नहीं है। स्वामी दयानन्द ने जीवन को पूर्णता से लिया है। वे एक ओर यज्ञ अर्थात् 'पंच महायज्ञ' से 'अश्वमेध यज्ञ' तक की प्रेरणा देते हैं। साथ–ही–साथ प्रत्येक व्यक्ति को योग के मार्ग पर यम–नियम से समाधि तक बढ़ने और अन्तर्ज्ञान एवं तार्किक ज्ञान से ब्रह्म के साक्षात्कार का भी उपदेश देते हैं। ईश्वर से हमारा केवल एक सम्बन्ध नहीं; हमारे अवगुण भी एक प्रकार के नहीं; इस कारण जीवन–लक्ष्य की प्राप्ति के पथ भिन्नतायुक्त हैं। आचार्य जैमिनि की पूर्व मीमांसा का विषय कर्मकाण्ड है। इसके प्रारम्भिक कुछ 'अधिकरण' दार्शनिक प्रकृति के हैं जो दृष्टिकोण के सिद्धान्तों, वेद के प्रामाण्य और जीव–ब्रह्म सम्बन्धों का उपदेश करते हैं। इस शास्त्र के अन्य विषय इस पुस्तक की सीमा में नहीं आते। स्वामी दयानन्द ने इस शास्त्र को प्रमाण तो अवश्य माना किन्तु इसका अधिक उपदेश नहीं किया। संक्षेप में यही कहना पर्याप्त होगा कि स्वामी दयानन्द ज्ञान और कर्म के समन्वय के प्रतीक हैं। ज्ञान एवं कर्म के समन्वय में ही जीवन की सार्थकता है।

महर्षि दयानन्द भारत माता के ऐसे महान् सपूतों में से हैं, जिनके व्यक्तित्व पर जितना भी अभिमान किया जाय, थोड़ा है।

– खुदीजा बेगम, एम. ए.

thearyasamaj.org

पुराण परम्परा में जो मृत्यु है, वही मृत्यु कठोपनिषद् में है जिसके पास आकर नचिकेता ज्ञान प्राप्त करता है। यही मृत्यु शतपथ ब्राह्मण के उपनिषद् में जिसे बृहदारण्यकोपनिषद् कहा जाता है, मृत्यु प्राध्वंसन है। (4.6.3.)।यही वह यम है, जिसके साथ सावित्री का संवाद होता है तथा सावित्री अपने पति सत्यवान् को उसके पाश से न केवल छुड़ा लेती है अपितु स्वयं के तथा अपनी माता के लिए सन्तति का वर प्राप्त कर लेती है, सास ससुर के अन्धेपन को दूर करवाकर दृष्टि प्राप्त करवा देती है, उनका राज्य भी पुनः प्राप्त करा देती है। यह भी नहीं कहा जा सकता है कि ये दोनों भिन्न – भिन्न व्यक्ति थे। कठोपनिषद् के मृत्यु को यम वैवस्वत अन्तक भी अनेक बार कहा गया है। अतः यह किसी आचार्य का नाम है ऐसा नहीं माना जा सकता है। यहॉ इनका अलौकिक सामर्थ्य भी स्पष्ट शब्दों में कहा गया है। नचिकेता के मांगे प्रथम वर को स्वीकार करते हुए यम कहते हैं :–

"यथा पुरस्ताद् भविताप्रतीतः औद्दालकि रासणिर्मत्प्रसृष्टः सुखं रात्रीः शयिता वीतमन्युः त्वां दहशिवाम् मृत्युमुखात् प्रमुक्तम् ।। – 1.1.11

मेरे आदेश से शान्तमना आरूणि औद्दालकि तुम पर पहिले की तरह ही प्रसन्न हो जावेंगे। मृत्युमुख से छूटे तुम्हें देखकर दैत्यभाव से मुक्त वे रात्रियों में सुख की नींद लेंगे। नचिकेता कहते हैं कि स्वर्गलोक में कोई भय नहीं है, न आप भी वहॉ हैं और न व्यक्ति बुढ़ापे का भय ही भोगता है। (12) नचिकेता तीसरा वर मांगता है वह कहता है कि मृत व्यक्ति को लेकर दोनों ओर के ही विचार होते हैं कि वह है और वह नहीं है। मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि वास्तविकता क्या है, मुझे यही उपदेश दीजिए। यम कुछ आनाकानी करते हैं, अनेक लोभ भी दिखाते हैं कि इस वर को छोड़कर वह कुछ भी मांग ले, वह शतायु पुत्र पौत्रों की मांग कर सकता है, मर्त्यलोक में दुर्लभ जो कुछ भी है यम सब कुछ देने को उद्यत हैं, यह इस नाम का कोई आचार्य नहीं कह सकता है ऐसे सामर्थ्य के अभाव में । यह वस्तुतः मृत्यु ही है। इसी उपनिषत् में यम का एक दूसरा रूप भी स्पष्ट देखने में आ रहा है ।

अपने पिता द्वारा सर्वस्वदान यज्ञ में सर्वस्व के नाम पर जीवन पूरा सा कर चुकी तथा मौत के मुख में जाती गायों का दान उस विद्वान् बालक नचिकेता को ठीक नहीं लगा इसमें उसे पिता की विवेकहीनता उभरी हुई लग रही थी। अतः उसने पिता को चेताने की दृष्टि से पूछा कि पिताजी! मुझे किसे दान में दे रहे हैं। लोगों के समक्ष यह पूछना उन्हें ठीक नहीं लगा, अपना क्रोध दबाकर वे चुप्पी साध गये। नचिकेता चुप रहने वाला नहीं था उसने दूसरी–तीसरी बार प्रश्न दोहरा दिया तो झल्लाए हुए पिता ने कह दिया – '

"मृत्युवे त्वा ददामि – तुझे मैं मृत्यु को दे रहा हुँ।"

जिसे दिया गया है उसके पास जाना कर्त्तव्य है तभी पिता के आदेश की पूर्ति होगी , इस दृष्टि से नचिकेता यम के पास चला जाता है। यम घर पर नहीं मिलते हैं। गृहस्वामिनी अतिथि सत्कार का पूरा आग्रह करती है किन्तु बालक कुछ भी स्वीकार नहीं करता है अब वह यम का हो गया है, यम उसके स्वामी हैं। अतः जब तक वह स्वामी को समर्पित नहीं कर देता है, वह अन्य कुछ भी करने का अधिकारी नहीं है। इस स्थिति में तीन दिन निकल जाते हैं। इस कठोर स्थिति में यम पत्नी धूमोर्णा अत्यधिक अधीर और विह्वल हो उठती है तथा आते ही यम को कहती है कि उस वैश्वानराग्नि अतिथि को पाद्य और अर्घ्य से शान्त कीजिए। कहीं ऐसा न हो कि हमारी आशा, प्रतीक्षा, संगत, मधुरवाणी, इष्ट और पूर्त, पुत्र, पशु अर्थात् सब कुछ नष्ट हो जावें । एक भूखे प्यासे ब्राह्मण अतिथि इस भॉति पड़े रहने से । अब इस गृहस्थ यम को देखिये, वे नचिकेता के पास विनीत भाव से कहते हैं – ब्रह्मन् ! आप जैसा नमस्करणीय अतिथि तीन रात मेरे घर बिना खाये पीये रहा इस प्रत्यवाय की शान्ति के लिए ब्रह्मन् मैं आप को नमन कर रहा हूँ, मेरा स्वस्ति हो, कृपया आप मुझसे तीन वर मांग लीजिये।

– क्रमशः

– प्रो. अनन्त शर्मा , अध्यक्ष, साहित्य–संस्कृति पीठ,
राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर ।

स्वामी दयानन्द ही प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने "भारत – भारतीयों के लिए" की घोषणा की। – श्रीमती एनीबेसेण्ट

thearyasamaj.org

खुशियों का पर्व है – होली

होली पर्व के पावन अवसर पर मैं आप सब को हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ। परम–पिता–परमात्मा से अपने आनन्दमय जीवन की कामना करती हूँ।

भारतीय संस्कृति मर्यादा, शील, सदाचार एवं उल्लास की संस्कृति है। इसीलिए भारत का जन–जीवन विभिन्न पर्वों तथा सांस्कृतिक उल्लासों से प्रभावित होता रहता है। इन पर्वों में से एक पर्व है–'होली' । जब आशा के अंकुर उगने लगें, नयी लहरों के साथ प्रकृति के सात रंग बिखरने लगे , धरती का कण–कण खिलने लगे, ढोल–बाजों तथा होली के गीतों की मधुर ध्वनि देर रात तक सुनाई पड़े तो समझो ''होली पर्व'' का पदार्पण हो रहा है। एकाएक जीवन संगीत रस से भाव–विभोर हो जाता है। होलिका पर्व की यही विशेषता है – प्रकृति से लेकर मानव मात्र में प्रफुल्लता का संचार होता है। जैसे बसंत ऋतु, वर्ष की अन्तिम ऋतु है। चैत्र मास की प्रथमा को नववर्ष का शुभारम्भ होता है वैसे ही 'होली' भी वर्ष का अन्तिम पर्व माना जाता है। इस अवसर पर अधिकांश लोग कहते हैं ''होली सो होली'' अर्थात् भूतकाल को भुलाकर भविष्य के निर्माण में लगें।

अन्य भारतीय पर्वों की ही भांति होली पर्व भी कृषि और प्रकृति से गहरा जुड़ाव रखता है। इस समय खेतों में फसल पककर तैयार हो जाती है और उस फसल को उपयोग में लेने से पूर्व महान् भारतीय परम्परा के अनुसार सर्वप्रथम यज्ञ में आहुति डाल ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उसके प्रति कृतज्ञता की भावना प्रकट करते हैं। पश्चात् उस अन्न को व्यवहार में प्रयोग लिया जाता है। नवीन अन्न की प्राप्ति के साथ अभीष्ट की पूर्ति की भावना के साथ ये यज्ञ किया जाता है,इसलिए इसे ''नवसस्येष्टि यज्ञ'' कहा जाता है।

कालान्तर में आई अनेक विकृतियों में एक विकृति यह भी है कि यज्ञों का स्थान ''होलिकादहन'' ने ले लिया । मूलरूप और भावना में अन्तर नहीं आया, परन्तु स्वरूप विकृत हो गया । लोग आज भी सायंकाल में बड़ी अग्नि प्रज्ज्वलित कर उसमें सामूहिक रूप से विभिन्न पदार्थों को डालते हैं और फिर गेहँ, चना आदि की बालियॉ सेकते हैं। तथा उनका सेवन करते हैं। यद्यपि इसमें भक्त प्रहलाद एवं उसकी बहन होलिका की कथा भी जोड़ दी गई है। इतना ही नहीं रंग–बिरंगी खुशियों से सजे इस पर्व में स्वार्थ, मद्य, मैथुन आदि का भी अत्यधिक रूप में समावेश हो चुका है। जिस कारण इस पर्व की महानता एवं पवित्रता कलुषित हो रही है। जो कि पतन का संकेत देते हैं। अतः मेरी सभी से आशा है कि होली के पर्व को अपने पावन स्वरूप में स्थापित कर भारतीय संस्कृति के निर्माण में योगदान प्रदान करें।

– श्रीमती अरूणा सतीजा, जयपुर

आर्य समाज बांदीकुई का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, रेलवे कॉलोनी ,बांदीकुई , दौसा द्वारा आर्य समाज भवन में दिनांक 27 फरवरी से 1 मार्च, 2015 तक वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में ''सामवेद पारायण यज्ञ'' का आयोजन किया गया । तीन दिन तक चले इस आयोजन में प्रतिदिन प्रातः 5–6 बजे तक योग कक्षा, प्रातः 8–12 बजे एवं सायं 3–6 बजे तक यज्ञ एवं भजनोपदेश हुए । 1 मार्च रविवार को कार्यक्रम के समापन समारोह में सर्वप्रथम पूर्णाहुति यज्ञ किया गया । यज्ञ के पश्चात् भूपेन्द्र जी आर्य द्वारा भजनों की प्रस्तुति दी गई। सम्पूर्ण आयोजन श्री शिवकुमार आचार्य, बीकानेर के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का समापन शान्तिपाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ किया गया ।

अजमेर जिले की समस्त आर्य समाजों की बैठक सम्पन्न

22 फरवरी को अजमेर जिले के अन्तर्गत आने वाली समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधियों की बैठक आर्य समाज, आदर्श नगर, अजमेर की आयोजित की गई । आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री डॉ. सुधीर शर्मा ने बैठक को सम्बोधित करते हुए सभा द्वारा संचालित गतितिधियों एवं आगामी कार्यक्रमों के विषय में जानकारी दी। पश्चात् सभी आर्य समाजों से कार्य प्रगति की रिपोर्ट ली और उनकी समस्याओं को सुनकर विचार विमर्श किया तथा कुछ का मौके पर ही निपटारा किया । बैठक में अजमेर जिला उपप्रतिनिधि सभा को अगले 6 माह तक विधिवत् रखकर कार्यों को आगे बढ़ाने पर सहमति बनी। बैठक में परोपकारिणी सभा, अजमेर के मंत्री श्री ओममुनि जी एवं अजमेर संभाग के उपप्रधान श्री मदनलाल जी, आचार्य मोक्षराज जी, अशोक जी आदि भी उपस्थित थे।

यदि आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में 'स्वराज्य' शब्द न लिखते तो आज स्वराज्य की पुकार सुनाई न देती

– वीर सावरकर

thearyasamaj.org

आर्य समाज, बीकानेर द्वारा बोध दिवस मनाया गया

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर द्वारा 17 फरवरी को युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के बोध दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया । विशेष यज्ञ से आरम्भ हुए कार्यक्रम में पश्चात् मधुर भजनों की प्रस्तुति दी गई । कार्यक्रम में विभिन्न वक्ताओं ने आर्य समाज की मान्यता , ईश्वर के सच्चिदानन्दस्वरूप आदि गुणों पर अपने–अपने विचार प्रस्तुत करते हुए बताया कि वेद ईश्वरीय है और उसमें कहीं भी मूर्तिपूजा का विधान नहीं हैं । कार्यक्रम का समापन शान्तिपाठ के साथ हुआ ।

विश्व पुस्तक मेला, 2015 में रही आर्य समाज के प्रचार–प्रसार की धूम

विश्व पुस्तक मेला, 2015 प्रगति मैदान, नई दिल्ली में 14 फरवरी से 22 फरवरी तक आयोजित हुआ। इस मेले में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा व्यापक स्तर पर भाग लिया गया । इस पुस्तक मेले में दिल्ली सभा द्वारा वैदिक साहित्य की हिन्दी 6 स्टॉल और अंग्रेजी वाली 1 स्टॉल लगायी गयी। जिसमें वेदभाष्य से लेकर छोटी से छोटी, सरल से सरल वैदिक पुस्तकों को विक्रय हेतु रखा गया। इन स्टाल्स पर वैदिक साहित्य के विक्रय के साथ–साथ सिद्धांतों के प्रचार हेतु भी अनेक प्रकार की व्यवस्थाएं भी की गई । युवाओं की कुछ टीम पूरे मेले में घूम–घूम कर लोगों को वैदिक स्टॉल के बारे में परिचय प्रदान करती तो कुछ टीम स्टॉल पर लोगों को पुस्तकों के विषय में विभिन्न प्रकार से शोधपूर्ण जानकारियॉ प्रदान कर उत्साहित करती । इस पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य की स्टॉल पर प्रतिदिन हजारों लोगों का आगमन होता था। जिससे भारी संख्या में वैदिक साहित्य का विक्रय हुआ । सर्वाधिक मांग वाला ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' रहा । सत्यार्थ प्रकाश के प्रति लोगों की तीव्र लालसा को देखते हुए विभिन्न प्रकाशनों द्वारा यह कालजयी ग्रन्थ मात्र 10रू में उपलब्ध करवाया गया । साहित्य के विक्रय का आलम ये था कि इस वर्ष 8 लाख का वैदिक साहित्य, 50 सेट हिन्दी एवं इंग्लिश वेद भाष्य के, 10000 प्रतियॉ सत्यार्थ प्रकाश की विक्रय की गई।

इस स्टॉल की एक विशेषता और भी रही कि दिल्ली सभा द्वारा कुछ विद्वानों को वहॉ पर आगन्तुकों की भ्रान्तियॉ दूर करने, शंका समाधान करने के लिए सभी दिन सेवा प्रदान करने का अवसर प्रदान किया गया। इसका प्रभाव ये पड़ा कि अनेक मुसलमान भाईयों ने भी धर्म, ईश्वर, योग एवं अन्य विविध विषयों पर गहन विचार–विमर्श कर वेदभाष्य, सत्यार्थ प्रकाश, आदि सहित अनेक पुस्तकों का क्रय किया ।

इस पुस्तक मेले में अपने सक्रिय सहयोग हेतु वैदिक विद्वान् आचार्य सनतकुमार जी, ब्रह्मचारी नन्दकिशोर जी, आचार्य संदीप जी सोनीपत, श्री संजय जी कुरूक्षेत्र, श्री जमनादास जी उद्गीर, श्री हरिप्रसाद जी हिण्डौन, बन्नू जी –उत्तराखण्ड से, मुकुल शर्मा जी पंजाब से, अनुभव आर्य जी प्रयाग से पहुॅचे । इसके अतिरिक्त अनेक आर्य युवाओं, कार्यकर्ताओं ने भी इस कार्य में अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

सोशल मीडिया ने भी इस कार्य की सफलता में अतिमहत्वपूर्ण भूमिका निभायी ।

इस स्टॉल में आर्य जगत् के प्रसिद्ध प्रकाशकों ने पुस्तकें सस्ते दामों में उपलब्ध करवायी।

स्वामी दयानन्द जयन्ती एवं ऋषिबोध दिवस मनाया

गंगापुर सिटी । स्थानीय आर्य समाज मन्दिर में दिनांकः 14 फरवरी 2015 शनिवार को स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म दिन यज्ञ के साथ मनाया गया । इस अवसर पर सत्यप्रकाश आर्य ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला ।

दिनांक : 15 से 17 फरवरी 2015 तक चतुर्वेदशतकम् यज्ञ के साथ ऋषिबोध दिवस मनाया गया । इस अवसर पर पं0 शिवपाल आर्य साहित्यरत्न , एटा भजनोपदेशक द्वारा भजनो के माध्यम से ऋषि जीवन पर उपदेश दिये गये। मन्त्रपाठ ब्रह्मचारिणी नीलम ने किया ।

गोविन्द प्रसाद आर्य ,
प्रधान – आर्यसमाज, गंगापुरसिटी

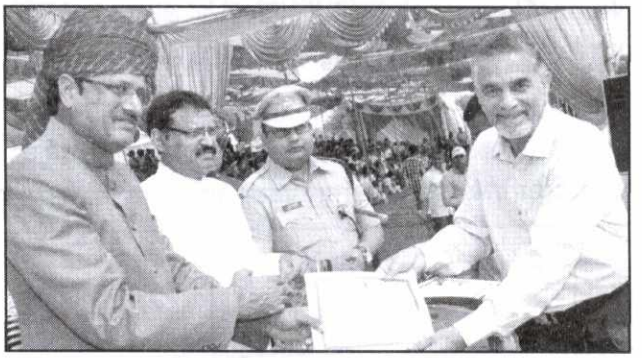

माननीय राजेन्द्र सिंह राठौड़, चिकित्सा मंत्री, राजस्थान सरकार , आर्य समाज वैशाली नगर, जयपुर के प्रधान डॉ. मोतीलाल जी शर्मा को ''भामाशाह सम्मान'' प्रदान करते हुए ।

स्वामी दयानन्द राष्ट्रीय संगठन व पुनर्निर्माण करने वाले अन्यतम श्रेष्ठ ऋषि थे। – फ्रेंच लेखक रोम्यॉ रोला ।

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का वार्षिक चित्र

इस प्रपत्र में पूर्ण विवरण अवश्य भेजे

1 अप्रैल ..... से 31 मार्च ..... तक का विवरण एवं 1 अप्रैल ..... से 31 मार्च ..... तक का विवरण

आर्य समाज ..... जिला ..... का वार्षिक वृत्तान्त

आय का विवरण	रू.	पै.	व्यय का विवरण	रू.	पै.
सभासदों का चंदा			साप्ताहिक सत्संग में		
दान			खर्च		
			अतिथि सत्कार		
मकान किराया			सभा को निश्चित कोटि		
			सभा को दशांश		
			वेद प्रचार		
विवाह संस्कारों से आय			आर्य मार्तण्ड		
			दयानंद सेवा सदन		
वार्षिकोत्सव से बचत			वार्षिक उत्सव		
अन्य आय			विशेष प्रचार आदि		
योग			योग		

1. वर्ष के आरम्भ में सभासदों की संख्या
   वर्ष के अंत में आर्य सभासदों की संख्या
   आर्यों (सहायकों) की संख्या रही।
2. वार्षिक निर्वाचन दिनांक को हुआ।
3. अंतरंग साधारण सभा बार हुई।
4. वार्षिकोत्सव दिनांक को हुआ।
5. सभा को दी गई राशि की
   रसीद सं. दि. है।
   (1) निश्चित कोटि (2) दशांश
   (3) आर्य मार्तण्ड (4) अन्य
6. उपर्युक्त आय पर दशांश की राशि बनती है।
   दशांश निश्चित कोटि आर्य मार्तण्ड का कुल योग होता है।
7. आर्य समाज के अधीन निम्नस्थ संथायें हैं।
   (यहां केवल नाम ही लिखें, ब्यौरा पृथक संलग्न करें)
8. इस समाज की साधारण सभा दिनांक द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए निम्नस्थ प्रतिनिधि चुने गये।

क्र. सं.	प्रतिनिधि का नाम	पिता का नाम	आयु	शतांश चन्दा	हस्ताक्षर प्रतिनिधि
1.					
2.					
3.					
4.					

प्रमाणित किया जाता है कि उपर्युक्त प्रतिनिधियों की अधिवेशनों में उपस्थिति नियमानुकूल है तथा इनकी आय का शतांश चन्दा पूरे वर्ष का प्राप्त हो चुका है। सभा के अधिवेशन में वे ही प्रतिनिधि भाग ले सकेंगे जिनके आय का शतांश चन्दा उपर्युक्त वार्षिक चित्र में अंकित होगा।

दिनांक ..... ह० प्रधान ह० मंत्री ह० कोषाध्यक्ष ह० ऑडीटर

आर्य समाज के आर्य सभासदों की सूची जिनका गत वर्ष का पूरा चन्दा जमा हो चुका है और साप्ताहिक अधिवेशन में 25% उपस्थिति है। वे दो वर्ष से अधिक समय से सदाचार पूर्वक आर्य समाज के सदस्य है।

क्र.सं.	नाम	पिता का नाम	पुत्र/ पुत्री	आयु	मासिक आय चन्दा	साप्ताहिक अधिवेशन में उपस्थिति	विशेष

ह० मंत्री आर्य समाज

स्वामी दयानन्द ने हिन्दू समाज के पुनरूत्थान में इतना अधिक हाथ बंटाया कि उन्हें 19वीं शताब्दी का प्रमुखतम हिन्दू समझा गया ।

– तारकनाथ दास, म्यूनिख (जर्मनी)

thearyasamaj.org

बोध दिवस पर किया गया "प्रभात फेरी का आयोजन "

आर्य समाज एवं आर्य वीर दल , गंगापुर सिटी द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती बोध दिवस के उपलक्ष्य में प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। आर्य समाज भवन से आरम्भ हुई यह प्रभात फेरी शहर के मुख्य मार्गों से निकाली गई । प्रभात फेरी में बड़ी संख्या में बच्चों, युवाओं, महिलाओं ने भाग लिया। जो लोग इसमें सम्मिलित नहीं हो पाये वो सभी घरों की छतों से, बालकनीयों से , द्वारों से देखते हुए इसमें जुड़ने का प्रयास कर रहे थे। महर्षि दयानन्द की जय, आर्य समाज अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे, वैदिक धर्म की जय जैसे नारों की ध्वनि से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो पूरा शहर ही दयानन्दमयी हो गया हो। अन्त में यह फेरी पुनः आर्य समाज भवन में ही आकर सभा के रूप में परिवर्तित हुई । जहाँ आर्य समाज के प्रचारक और स्तम्भ श्री मदनमोहन जी आर्य का ओजस्वी उद्‌बोधन स्वामी जी के जीवन पर हुआ । तत्पश्चात् शान्तिपाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ ।

ऋषि जन्मोत्सव पर भव्य शोभायात्रा का आयोजन

आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर एवं जिले की समस्त आर्य समाजों द्वारा युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के 191 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 14 फरवरी, 2015 को प्रातः 9 बजे से एक भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। जिसमें सर्वप्रथम झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती, अहिल्या बाई होल्कर, हाड़ी रानी व गार्गी जैसी वीरांगनाएँ, विदूषी अश्व पर सवार थी। भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव, बिस्मिल आदि को फाँसी लगते हुए दृश्यों को सजीव दिखाया गया । शोभायात्रा में छात्राओं द्वारा विभिन्न सामाजिक सरोकार से जुड़ी 15 झाँकियों को प्रदर्शित करने के साथ–साथ कदमताल, डम्बल, लेजियम, लाठी, तलवार, आसन, जूड़ो एवं योगासनों का मनमोहक प्रदर्शन किया गया । इसके अतिरिक्त गुरूकुल भादस, हरियाणा के ब्रह्मचारियों द्वारा भी व्यायाम प्रदर्शन किया गया।

शोभायात्रा में विद्यालय की छात्राओं के अतिरिक्त आर्य संन्यासी, वानप्रस्थीयों, ब्रह्मचारियों, भजनीक, आर्य नेताओं, अलवर जिले के प्रबुद्ध नागरिक, महिलाओं एवं आर्य जनों ने भाग लिया । इस विशाल शोभायात्रा का 51 स्वागत द्वारा बनाकर विभिन्न स्थानों पर स्वागत, फल–मिठाई आदि का वितरण किया गया । शोभायात्रा ने अलवर को दयानन्दमयी बना दिया ।

आर्य वीर दल, राजस्थान का प्रान्तीय अधिवेशन सम्पन्न

आर्य समाज के युवा संगठन आर्य वीर दल की राजस्थान प्रान्तीय इकाई का अधिवेशन दिनांक 22 फरवरी को दयानन्द बाल सदन, अजमेर में केन्द्रीय महामंत्री श्री सत्यवीर जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । अधिवेशन में प्रान्तीय कार्यकारिणी, सम्पूर्ण प्रान्त के जिला संचालकों, प्रतिनिधियों, शिक्षकों, वरिष्ठ कार्यकर्ताओं, प्रमुख आर्य संन्यासियों ने हिस्सा लिया । आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के मंत्री डॉ. सुधीर शर्मा अधिवेशन में विशेष आमन्त्रित थे।

प्रातः 10 बजे से आरम्भ हुए अधिवेशन में सर्वप्रथम संगठन के प्रान्तीय महामंत्री श्री भवदेव जी शास्त्री ने पिछले अधिवेशन की कार्यवाही , संगठन की कार्य प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की । इसके पश्चात् सभी जिला संचालकों ने अपने – अपने क्षेत्र में हो रही संगठन की गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की । संगठन के प्रान्तीय शिक्षक श्री भागचन्द आर्य ने अपने कार्य की रिपोर्ट प्रस्तुत की । सभी के द्वारा अपनी – अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के पश्चात् संगठन की भावी कार्य योजनाओं एवं आगामी ग्रीष्मकालीन प्रान्तीय शिविर पर चर्चा की गई ।

लगभग 4 घण्टे चले इस अधिवेशन में दो दिवसीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने एवं आगामी ग्रीष्मकालीन शिविर "ऋषि उद्यान" , अजमेर में 17 से 24 मई, 2015 तक आयोजित करने सम्बन्धी निर्णय लिये गये। अधिवेशन के पश्चात् संगठन के सात सदस्यीय प्रतिनिधि दल ने श्री सत्यवीर आर्य के नेतृत्व में श्री ओममुनि जी आर्य, मंत्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर से इस सम्बन्ध में "ऋषि उद्यान" में शिविर आयोजित करने एवं व्यवस्था सम्बन्धी महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की ।

– आचार्य देवेन्द्र शास्त्री, कार्यकारी संचालक,
आर्य वीर दल, राजस्थान

स्वामी दयानन्द भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के महानतम् संदेशवाहक थे। – बी.बी.मजूमदार

thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014-2016 / आर. एन. आई नं.10471/60

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान से सम्बद्ध आर्य समाज के मंत्री तथा प्रधानों को सूचित किया जाता है कि सभा का निर्वाचन आगामी जून माह में प्रस्तावित है, अतः जिन आर्य समाजों के वार्षिक मानचित्र विगत दो या एक वर्ष से सभा को प्रेषित नहीं किये गये हैं, वे समस्त आर्य समाजें अपना दो या एक वर्ष का दशांश, निश्चित कोटि तथा आर्य मार्तण्ड शुल्क 31 मार्च, 2015 तक सभा को निर्धारित प्रपत्र में भरकर आवश्यक रूप से प्रेषित कर देवे। प्रतिवेदन प्रपत्र हेतु एवं विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु सभा कार्यालय 0141–2621879 पर सम्पर्क कर सकते हैं।
- आर्य मार्तण्ड के नववर्ष से प्रकाशित होने वाले अंकों में एक नया कॉलम "शंका समाधान" का शुरू किया जाने का प्रस्ताव है, जिसमें पाठकों के द्वारा किसी भी विषय से सम्बन्धित शंकाएं की जा सकेंगी जिनका कि आर्य विद्वानों के द्वारा समाधान करवाया जायेगा। अतः सभी से निवेदन है कि जो भी विद्वान् इस कार्य में जुड़कर सहयोग करना चाहें, वे अपना नाम, पता, सम्पर्क, विशेषज्ञता आदि की जानकारी हमें aryamartand@gmail.com पर भेज सकते हैं।
- सभी आर्य समाजों, जिला आर्य प्रतिनिधि इकाईयों, आर्य महानुभावों से निवेदन है कि "आर्य मार्तण्ड" में समस्त राजस्थान का प्रतिनिधित्व हो सके, इसके लिए पत्र द्वारा स्वतन्त्र पत्रकारिता में रूचि रखने वाले आर्य महानुभावों को पत्र से जुड़ने का एक सुनहरा अवसर प्रदान किया जा रहा है। जो कोई भी अपने क्षेत्र में रहकर आर्य मार्तण्ड के लिए पत्रकारिता कर सेवा करने के इच्छुक हों, वे अपनी सम्पूर्ण जानकारी, फोटो के साथ aryamaratnad@gmail.com पर मेल कर सकते हैं।

प्रतिक्रिया

- प्रिय डॉ. शर्मा जी, नमस्ते! आर्य मार्तण्ड के सम्पादन का कार्यभार ग्रहण करने के लिए बधाई। मैंने भी 1968.72 तक इस कार्य का निर्वहन किया था। इसी अवधि में सभा का मंत्री भी रहा था। अब भी यदा कदा मार्तण्ड के लिए कुछ सामग्री भेजा करूंगा।

  – डॉ. भवानीलाल भारतीय, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, श्रीगंगानगर।

आदरणीय डॉक्टर साहब,

सादर नमस्ते! आर्य मार्तण्ड के अंकों में आ रहे नये नये कलेवर देख कर हृदय प्रफुल्लित हो गया। बड़ा अच्छा किया कि इस पत्र के सम्पादन का कार्य बोझ आपने अपने सशक्त कन्धों पर ले लिया। आदरणीय अमरमुनि जी के पास और भी कई कार्य हैं जिनमें उन्हें व्यस्त होना पड़ता है। आर्य मार्तण्ड के प्रत्येक पृष्ठ पर नीचे जो पंक्तियां मुद्रित हैं वे बड़ी सोच–समझ कर दी गई लगती हैं और बहुत प्रेरणादायक हैं।

इस विषय में मेरी एक शंका भी है कि "आर्य्र्य" में "र्य्र" दो क्यों हैं इसका कृपया औचित्य स्पष्ट करें। एक से ही काम सही चल सकता है।

– जयदेव अवस्थी, रातानाड़ा, जोधपुर।

- आर्य मार्त्तण्ड में हो रहे निरन्तर परिवर्तन से यह पत्र अब अधिक आकर्षक हो गया है। अब इसे पढ़ने में न केवल रूचि बनी है, अपितु यह उत्सुकता भी रहती है कि आगे आने वाले अंक में क्या नया होगा एवं किस नवीन विषय पर जानकारी होगी। इस परिवर्तन के साथ इस पत्र को रोचक एवं आकर्षक बनाने के लिए नवीन टीम को बहुत–बहुत धन्यवाद और शुभकामनाएं।

– अंकुस आर्य, प्रिंसीपल, आर्य बाल विद्यालय, भीलवाड़ा।

आगामी कार्यक्रम

- 22 मार्च, 2015 रविवार को प्रातः 9 बजे से आर्य समाज, किशनपोल बाजार, जयपुर में श्रीमती सरोज वर्मा द्वारा लिखित पुस्तक "यज्ञ : क्या, क्यों और कैसे?" का विमोचन।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर शर्मा, मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक:-
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

प्रेषित

विशेष - आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।